Journal of Socio-Educational & Cultural Research, Vol. 2, No. 5, July-December, 2016 ISSN : 2394-2878

वैश्विक भारत में दलित नारी

डॉ0 मोहित*

भारतीय सामाजिक संरचना, उसकी आर्थिक एवं राजनैतिक स्थिति आज वैश्विक दुनिया में बड़ी तेजी से विकसित एवं परिवर्तित हो रही है। औद्योगिक क्रान्ति, सूचना एंव संचार क्रान्ति आदि का विविध क्षेत्रों पर प्रभाव पड़ रहा है जिसके कारण विश्व बिरादरी में आज हमारा विकास का ग्राफ बड़ी तेती से बढ़ रहा है, जो एक शुभ संकेत को दर्शाता है लेकिन अगर हम भारतीय समाज की आधी आबादी अर्थात् नारी समाज पर नजर डालें, तो हमें महसूस होता है कि आज भी उनका भविष्य उतना उज्जवल नहीं है, जितना होना चाहिए। आज के वैज्ञानिक युग में भी नारी और पुरूष के चरित्र के मापदण्ड अलग–अलग हैं। विडम्बना यह है कि नारी के लिए सदियों पूर्व गढ़ी गई पुरूष समाज–व्यवस्था द्वारा घटिया व दकियानूसी मान्यताएं आज भी जस की तस मौजूद है, जो उनकी जिन्दगी को काँटो पर चलने के लिए मजबूर करती हैं और जब बात दलित समाज में महिलाओं की सामाजिक प्रस्थिति की हो, तो वह और भी दयनीय एवं निन्दनीय है। आज भी वह भगवान एवं भाग्य के भरोसे समाज में निम्नतम् जीवन–यापन व्यतीत करने को मजबूर हैं।

प्राचीन भारतीय समाज में नारी को देवी का रूप मानकर उसकी पूजा की जाती है। वैदिक ग्रन्थों में उनके लिए 'यंत्र ''नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता'' कहा गया है। जो पुष्टि करता है कि प्राचीन काल में उनकी सामाजिक प्रस्थिति उच्च कोटि की थी। लेकिन जब हम दलित महिलाओं की जिन्दगी पर नजर डालते हैं तो हमें पता चलता है कि उनकी वास्तविक जिन्दगी अति निकृष्टतम थी। दलित समस्या जाति व्यवस्था की देन हैं। जाति–व्यवस्था के अन्तर्गत दलित महिलाओं को अपवित्र समझे जाने वाले कार्य जैसे–नार काटना, जच्चा–बच्चा की सफाई करना (चमारी या सउरी), मैला फेंकना, गन्दे कपड़े धुलना, बुनाई का काम करना एवं बाँस का काम करना आदि आर्थिक व सांस्कृतिक दृष्टि से निम्न कोटि के काम दिये जाते थे और वे भाग्य एवं भगवान का प्रसाद मानकर काम करती थी, जिससे उनके सामाजिक एवं आर्थिक प्रस्थिति का पता चलता था, जो यह दर्शाताहै कि उनकी जिन्दगी कितनी निकृष्ट थी।

आज आधुनिक भारत में भी जब महिलाएं सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक एवं वैज्ञानिक क्षेत्रों में अपनी महती भूमिका निभा रही है, इस दुनिया में ही नहीं बल्कि अन्तरिक्ष में भी अपनी ताकत का परचम लहरा रही है। उस समय भी दलित महिलाओं की वास्तविक जिन्दगी निम्न कोटि की है। आधुनिक भारत में आँसुओं में डूबा बेबसी का मैला आँचल विद्यमान है। सुभाषिनी अली सहगल ने पाया कि–**''हमारे देश में आज भी ज्यादातर शहरों और कस्बों में इनसानी मैल भरी टोकरियाँ अपने सिर पर उठाने का काम 10 लाख से ज्यादा दलित महिलाएँ करती हैं मैल तो आखिरी टोकरी में ही होता है। वह रिसता भी है, गिरता भी है – और गिरता भी इन्हीं औरतों पर है।''**[1] तो उनकी वास्तविक स्थिति को दर्शाता है।

जब हम प्राचीन भारत में दलित नारी की पड़ताल करते हैं तो पता चलता है कि शूद्रों के साथ उनके सभी सामाजिक,शैक्षणिक, आर्थिक, धार्मिक एवं राजनैतिक अधिकार छीन लिए गये और उन्हें दासता का जीवन जीने के लिए बाध्य कर दिया गया। प्राचीन काल में वे देवदासी, संभ्रान्त समाज में गणिका, सामान्य जन से वेश्या जैसे विभिन्न नामों से जानी जाती थी। हाड़–तोड़ मेहनत करने के साथ वह मनोरंजन का साधन, बंधुआ मजदूर, दासी और हुकुम का गुलाम बनकर रह गई, जो एक वास्तविक यथार्थ है जिसे नकारा नहीं जा सकता है। लेकिन बदलते परिवेश में जब भगवान बुद्ध इस धरती पर आये, उनका बौद्ध–दर्शन समाज को जगाने का कार्य किया तो दलित महिलाओं के लिए भी मानवता, समता, बंधुता, करूणा और ज्ञान का द्वार खुल गया और यहीं से उनकी वास्तविक जिन्दगी बदलने लगी। इसीलिए बौद्ध काल को दलित महिलाओं का स्वर्णिम युग भी माना जा सकता है।

राष्ट्रीय–अन्तर्राष्ट्रीय पुरस्कारों से सम्मानित, प्रतिष्ठित साहित्यकार एवं परिवर्तन प्रभाकर की संपादक डॉ0 कुसुम मेधवाल के अनुसार भी सदियों से नरक के गर्त में गिरी को नरक से निकालने व गुलामी की जंजीरों से मुक्त कराकर, खुले वातावरण में साँस लेने व उसकी प्रगति के मार्ग को प्रशस्त करने में तथा उसके लिए मानवता,, समता, बंधुता, करूणा और ज्ञान के मार्ग खोलने में बौद्ध धर्म ने महत्वपूर्ण भूमिका

* **असिस्टेन्ट प्रोफेसर, समाजशास्त्र, महाविद्यालय भटवली बाजार, (उनवल), गोरखपुर**

निभाई है। आज जरूरत इस बात की है कि तथागत गौतम बुद्ध के बाद नारी स्वातंत्रय के कार्य को जिस तरह महामना ज्योतिराव फूले, सावित्री बाई फूले और बाबा साहब डॉ0 बी0आर0 अम्बेडकर ने आगे आकर गति प्रदान की, देश की दलित महिला लेखिकाएं उसी तरह अपनी लेखनी के माध्यम से दलित आन्दोलन को गति प्रदन करें।

भारतेन्दु हरिशचन्द्र पुरस्कार से सम्मानित लेखिका सुशीला कुमारी ने अपनी पुस्तक 'अबला बनाम सबला' में यह उल्लेख किया है कि– ''कामकाजी समेत सभी महिलाएँ पुरूषों के मुकाबले 10 प्रतिशत ज्यादा घरेलू काम करती हैं। इसलिए पुरूषों के दो घण्टे के मुकाबले महिलाओं को रोज पाँच मिनट का ही आराम मिलता है। समान काम के लिए पुरूषों के मुकाबले महिलाओं को औसतन 30 प्रतिशत कम वेतन मिलता है।''[4] जो दर्शाता है कि आज भी उनके संग विभेद हो रहा है।

आज बदलती दुनिया में नारी विकास का आयाम भी बदलने लगा है। आज उनका जीवन–यापन का स्तर कैसा है ? उनका स्वास्थ्य कैसा है ? उनका शिक्षा का स्तर कैसा है ? उनके रोजगार के साधन कैसे हैं, उनकी सामाजिक सुरक्षा कैसी है ? उनकी सामाजिक सहभागिता कितनी है ? उनकी बातों की अहमियत कितनी है आदि, देखा जाता है। अगर यह उच्च कोटि का है तो निःसन्देह कहा जा सकता है कि भारतीय समाज में नारी एवं दलित नारी का विकास हो रहा है, अबला सबला के रूप में उभर रही है, नहीं तो सबका सब केवल दिखावा एवं झूठ है।

निष्कर्ष रूप से हम कह सकते हैं कि आज हम चाहें जितना भी विकास एवं सभ्यता का तगमा पा लें कि लेकिन पुरूषवादी मानसिकता में आज भी महिलाओं की स्थिति निम्न हैं जिसे उससे छुटकारा दिलाकर ही एक सच्चे भारत की कल्पना कर सकते हैं।

1. आज भी दलित महिलाओं को गिरी निगाह से देखा जाता है। उनकी इज्जत को घास–मूली की तरह समझा जाता है, वक्त मिलते ही उसे कुचलने का प्रयास किया जाता है।
2. मैला ढोने की प्रथा आज भी विद्यमान है।
3. आज भी महिलाओं एंव दलित महिलाओं को सुरक्षित जीवन व्यतीत करने के लिए किसी न किसी पुरूष का ही सहारा चाहिए, चाहें वह पिता हो, भाई, पति हो या कोई संरक्षक हो। नहीं तो पुरूषवादी मानसिकता उसे कच्चे निचौड़ जायेगा।
4. आज भी पुरूषवादी मानसिकता उसे पूर्ण नहीं मानती, इसलिए वह सम्पत्ति उनके नाम, अगर मजबूरी नहीं है तो नहीं खरीदती है।
5. सामाजिक व शारीरिक एवं मानसिक पीड़ा की यातनाएं उन्हें आज भी झेलनी पड़ती है, जिन्हें घरेलू हिंसा में नाम से जाना जाता है। उसकी प्रताड़ना उसे आज भी पड़ती है।
6. महत्वपूर्ण मसलों पर इन्हें पुरूषवादी मानसिकता आज भी दरकिनार कर देता है।
7. आज भी उन्हें सामाजिक मान–मर्यादा (नैतिक एवं चरित्रिक) या शर्म का पर्दा है उसे आज के वैज्ञानिक युग में भी निभाना पड़ता है जिसे आज भी ग्रामीण समाज में देखा जा सकता है।
8. पंचायती राज व्यवस्था मे उन्हें पद तो मिल गया परन्तु वास्तविक निर्णय पुरूष ही करता है उसका विरोध वे नहीं कर पाती है।
9. आज नारी धरती पर ही नहीं बल्कि माँ के पेट में भी सुरक्षित नहीं हैं, जिसे कन्या भ्रूण हत्या के नाम से जाना जाता है, जारी हैं। जो वर्तमान एवं भविष्य के लिए अशुभ ही नहीं बल्कि अमंगलकारी है।

युग नायक स्वामी विवेकानन्द ने वर्षो पहले कहा था कि ''किसी भी राष्ट्र की प्रगति का सर्वोत्तम थर्मामीटर है वहाँ की महिलाओं की स्थिति ।'' इस लिहाज से देखा जाए तो वैश्विक भारत में हम वास्तव में उस पैमाने पर खरे नहीं उतरते हैं। जिसे पूर्ण करके ही हम सशक्त भारत की कल्पना कर सकते है।

संदर्भ :

1. हिन्दुस्तान, लखनऊ प्रकाशन, 07 सितम्बर, 2006, पृष्ठ' 8
2. अम्बेडकर टुडे, वर्ष 4, अंक–3, अक्टूबर, 2005, पृष्ठ–24
3. उपर्युक्त
4. हिन्दुस्तान, लखनऊ प्रकाशन, 2 अप्रैल,2007, पृष्ठ–18